अट्टू-गट्टू

एक पारम्परिक कथा

चित्र: केजल मिस्त्री

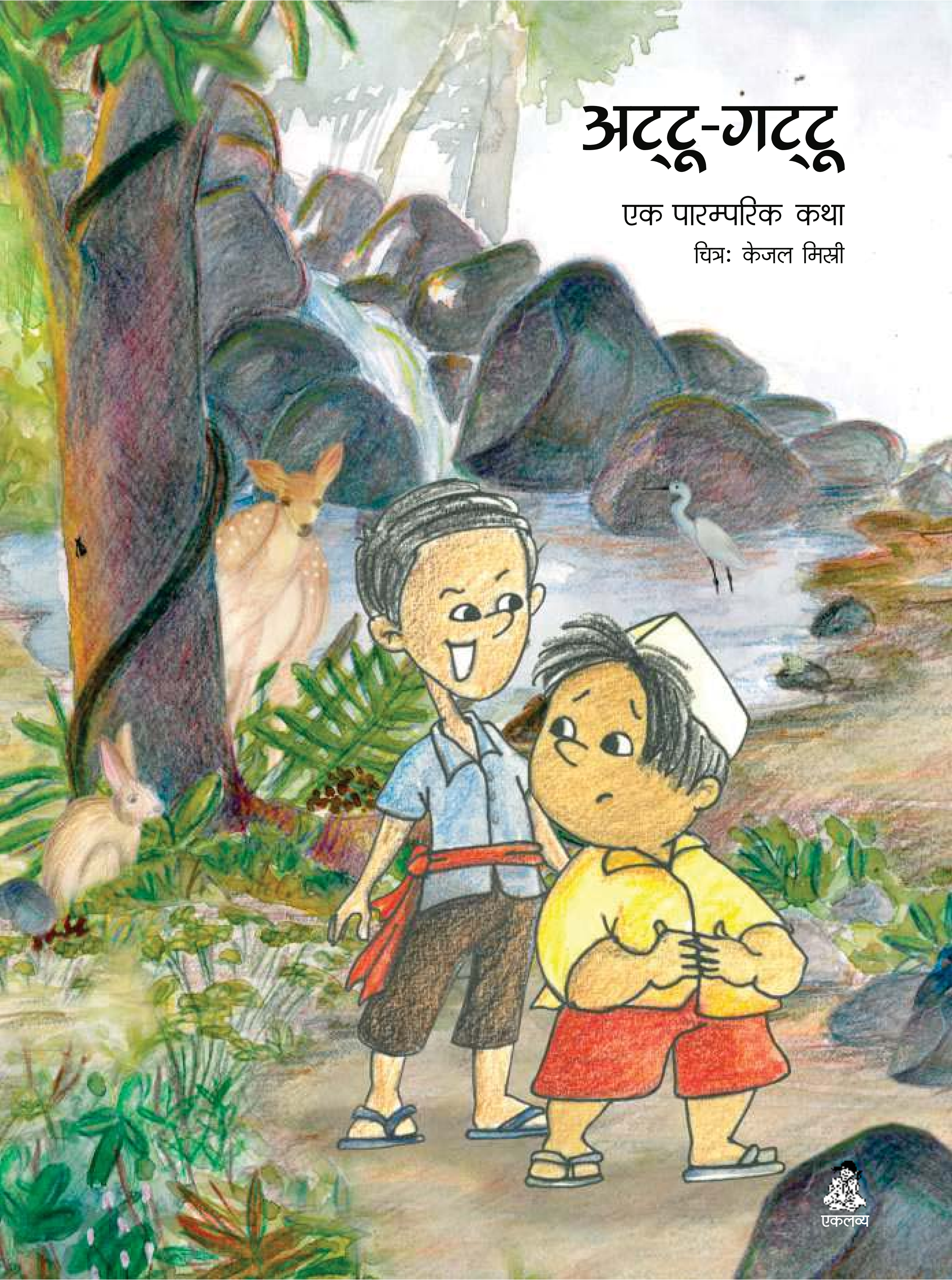

एकलव्य

अट्टू-गट्टू

एक पारम्परिक कथा
मराठी से अनुवाद: अशोक रोकड़े, वन्दना भूयर व निलेश निमकर
चित्र: केजल मिस्त्री

एकलव्य का प्रकाशन

अट्टू-गट्टू
ATTU-GATTU
एक पारम्परिक कथा
मराठी से अनुवादः अशोक रोकड़े, वन्दना भूयर व निलेश निमकर
चित्रः केजल मिस्त्री, क्रॉपमार्क्स डिज़ाइन, cropmarx@gmail.com

QUEST व एकलव्य
इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों से मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में QUEST एवं एकलव्य का ज़िक्र करना और सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य एवं QUEST से सम्पर्क करें।

यह किताब क्वालिटी एज्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (QUEST), पुणे द्वारा विकसित की गई है। (www.quest.org.in)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट तथा नवजबाई रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित
संस्करणः जून 2015 / 3000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो व 220 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-81337-71-4
मूल्यः ₹ 45.00

प्रकाशकः **एकलव्य**
ई-10, बी.डी.ए. कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर. के. सिक्युप्रिंट प्रा. लि., भोपाल, फोनः (0755) 268 7589

इस किताब में उपयोग किया गया कागज़ नवीकरणीय बागानों से प्राप्त लकड़ी से बना है।

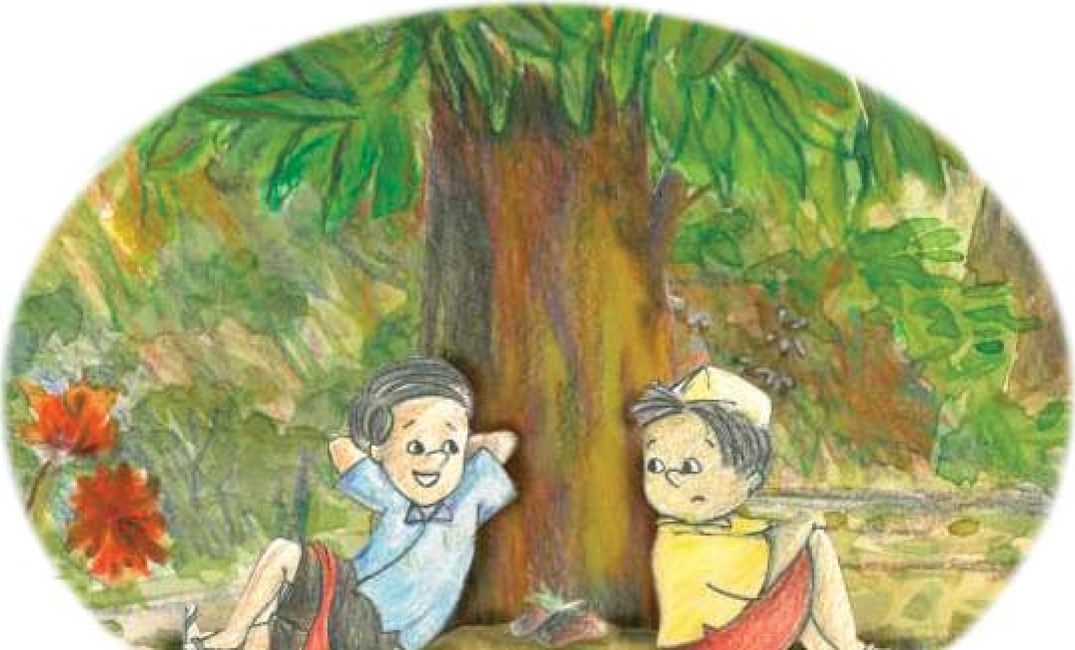

एक था अट्टू
एक था गट्टू

अट्टू और गट्टू घूमने चले,

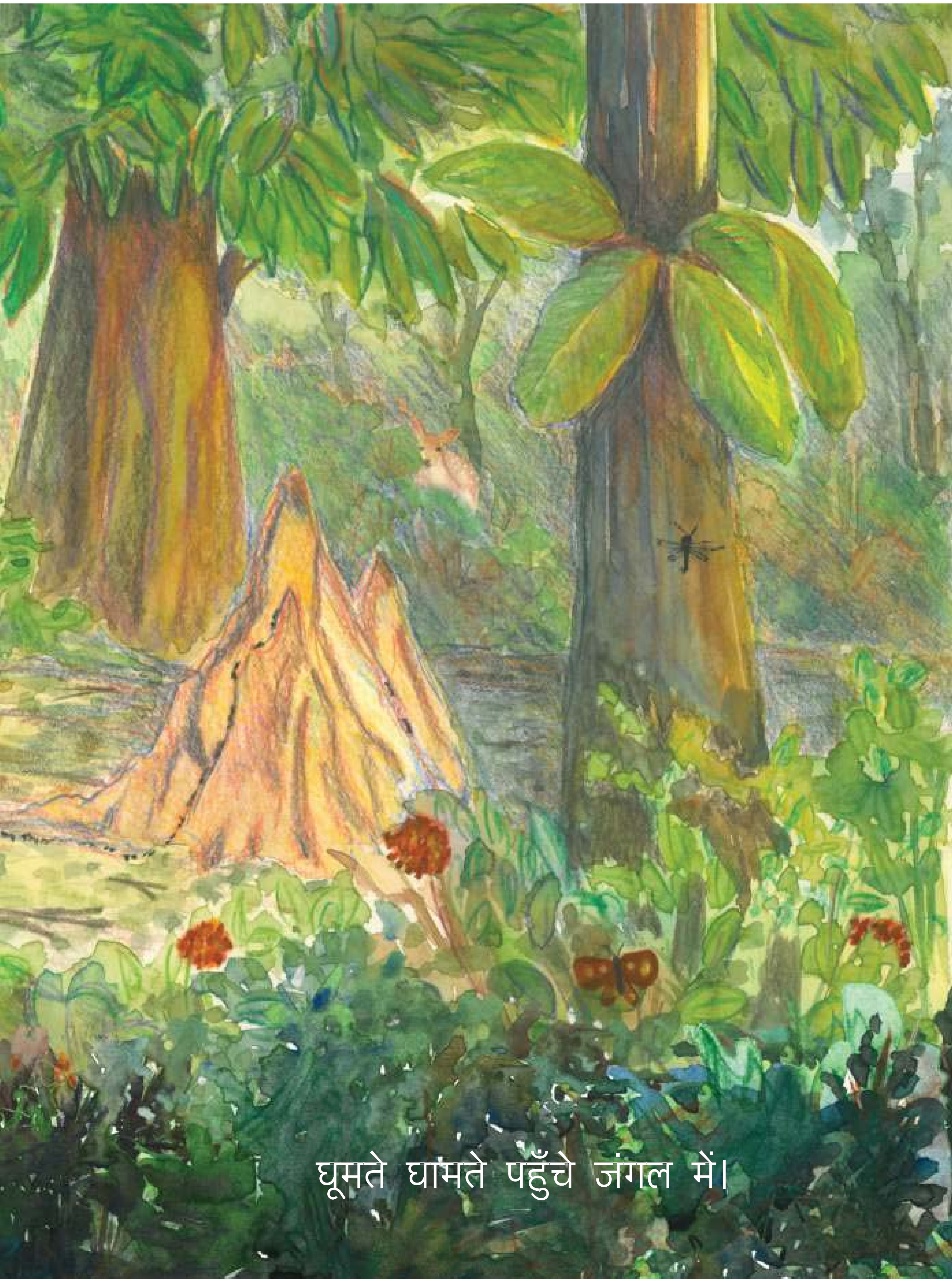

घूमते घामते पहुँचे जंगल में।

जंगल में देखा छोटा-सा झुरमुट
छोटी-सी बेल और बड़ा-सा पेड़।

पेड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में देखा छोटा-सा पोखर
छोटा-सा झरना और बड़ी-सी झील।

पानी में तैरना नहीं आया!

चलते-चलते देखी छोटी-सी टेकरी
छोटा-सा टीला और बड़ा-सा पहाड़।

पहाड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में सुनी एक सियार की आवाज़
एक बाघ की पुकार, एक शेर की दहाड़।

डर के मारे भाग न सके!

अट्टू और गट्टू बहुत डरे
रोने लगे, दौड़ने लगे।

घर की राह सूझे ना!

उधर से आए घोड़ेदादा
टप-टप-टप-टप घोड़ेदादा।

अट्टू-गट्टू बैठे घोड़े पर!

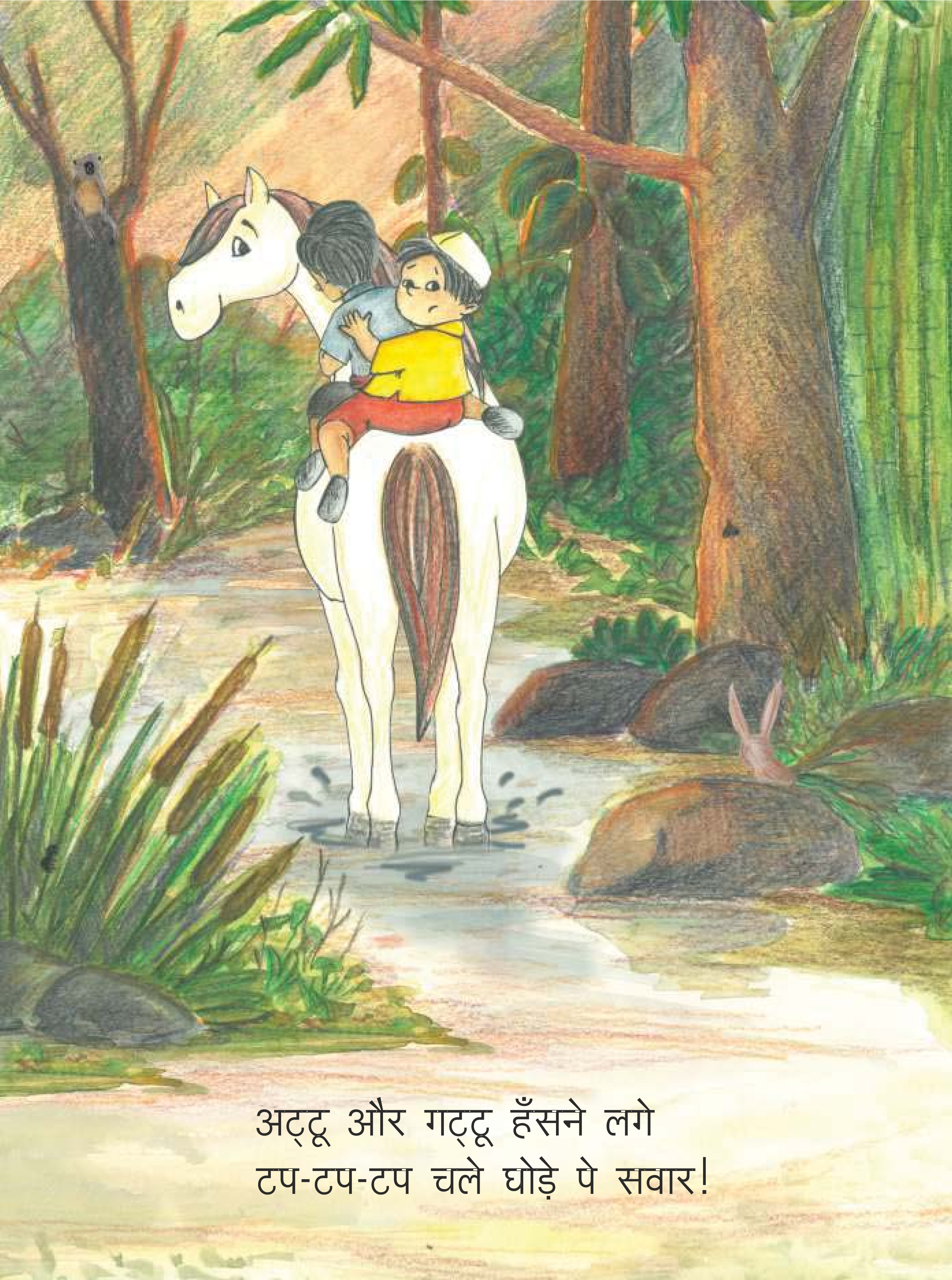

अट्टू और गट्टू हँसने लगे
टप-टप-टप चले घोड़े पे सवार!

अट्टू-गट्टू

एङ्क था अट्टू
एक था गट्टू

अट्टू और गट्टू घूमने चले,
घूमते घामते पहुँचे जंगल में।

जंगल में देखा छोटा-सा झुरमुट
छोटी-सी बेल और बड़ा-सा पेड़।
पेड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में देखा छोटा-सा पोखर
छोटा-सा झरना और बड़ी-सी झील।
पानी में तैरना नहीं आया!

चलते-चलते देखी छोटी-सी टेकरी
छोटा-सा टीला और बड़ा-सा पहाड़।
पहाड़ पे चढ़ना नहीं आया!

जंगल में सुनी एक सियार की आवाज़
एक बाघ की पुकार, एक शेर की दहाड़।
डर के मारे भाग न सके!

अट्टू और गट्टू बहुत डरे
रोने लगे, दौड़ने लगे।
घर की राह सूझे ना!

उधर से आए घोड़ेदादा
टप-टप-टप-टप घोड़ेदादा।
अट्टू-गट्टू बैठे घोड़े पर!

अट्टू और गट्टू हँसने लगे
टप-टप-टप चले घोड़े पे सवार!

क्वेस्ट (क्वालिटी एज़्युकेशन सपोर्ट ट्रस्ट) हरेक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके इसके लिए काम करने वाली स्वयंसेवी संस्था है। क्वेस्ट महाराष्ट्र के ठाणे और नंदुरबार ज़िले के आदिवासी बच्चों के साथ पिछले चार साल से काम कर रही है। बच्चों को पसन्द आए ऐसी किताबें तैयार करने का काम क्वेस्ट ने अपने हाथों में लिया है। उन किताबों में से एक है यह किताब।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है। यह पिछले तीन दशकों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में काम कर रही है। एकलव्य का मुख्य उद्‌देश्य ऐसी शिक्षा का विकास करना है जो बच्चे से व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो; जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो।

पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। बच्चों की पत्रिका *चकमक* के अलावा *स्रोत* (विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर) तथा *शैक्षणिक संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) हमारे नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुद्‌दों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्रियाँ आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

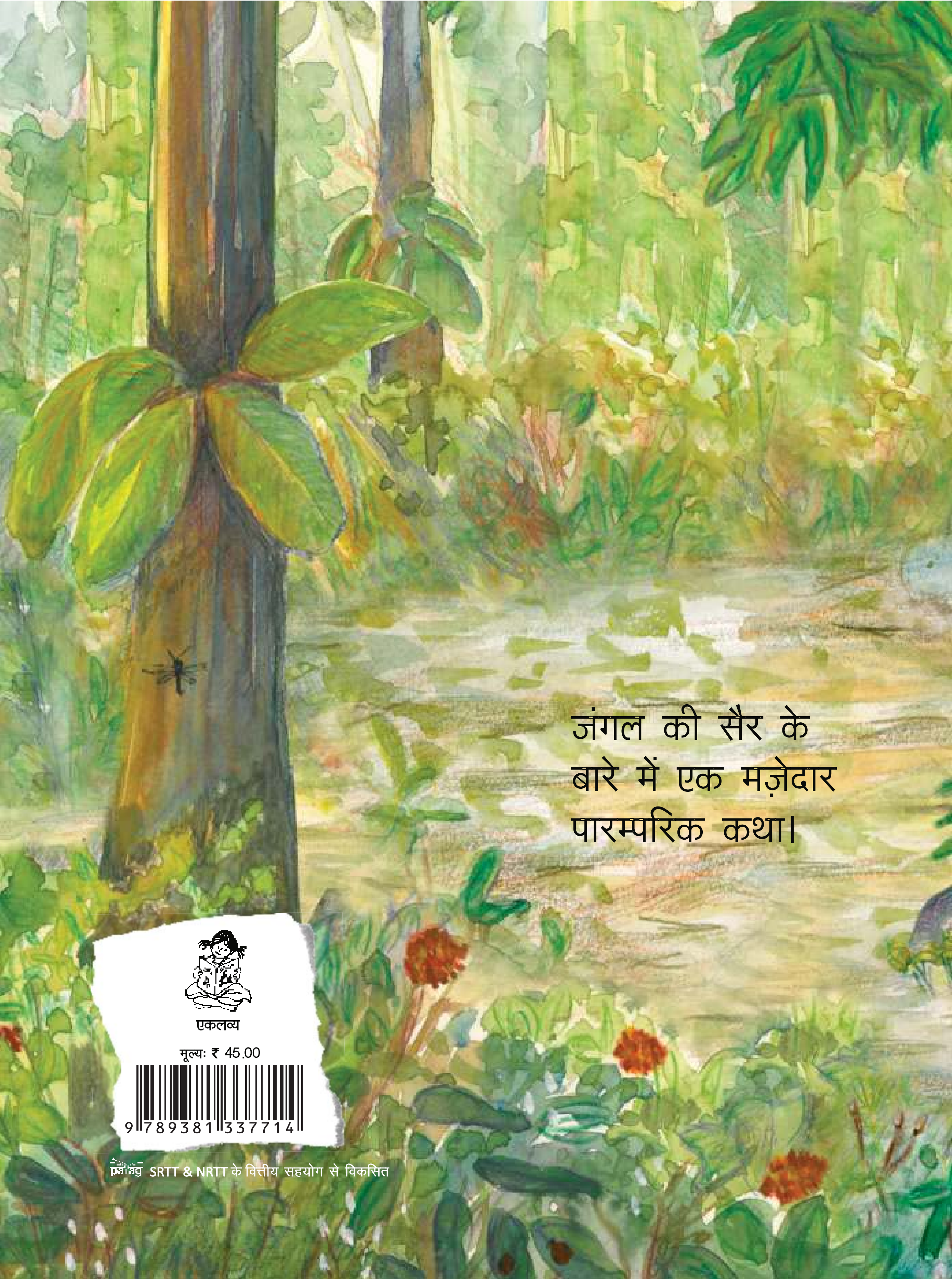

जंगल की सैर के
बारे में एक मज़ेदार
पारम्परिक कथा।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 45.00

9789381337714

SRTT & NRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित